कम करने का इन्तजाम नहीं किया जाता तब तक आप चाहे जो रिफार्म्ज लायें, कोई भी काम नहीं चल सकता है । आज भी हमारे गांवों की हालत बड़ी खराब है । सब लोग जानते हैं कि एक खेत है उस में हम ने भदई किया, रबी किया और अगहनी किया । उस के बाद खेत काटने को जाते हैं तो दो बोझे काट लाते हैं और तब खाते हैं । जब मजदूरी कुछ नहीं लगता है, कोई काम उस के लिये कहीं नहीं लगता है, तो वह जो बोता है वही काट कर खाता है । अगर आप वहां पर चकला बैठा देंगे तो कैसे काम चलेगा ? हमारी औरतें पर्दा आब्जर्व करती हैं, आज तो वह खेतों पर काम कर लेती हैं, लेकिन अगर आप चकला चला देंगे तो क्या वह दूसरों के खेतों में काम करेंगी ? कभी नहीं । महात्मा जी गावों की परिस्थिति को जानते थे, वहां की नब्ज पहचानते थे और उस के मुताबिक़ काम किया करते थे । हमारे भाइयों ने कहा कि यहां कोआपरेटिव बेसिस पर गांव में खेती की जाये । मैं अशोक मेहता साहब से पूछना चाहता हूं कि आप की पार्टी में १० आदमी हैं, उन में तो आपस में रिफ्ट पड़ गया तब आप कैसे समझ सकते हैं कि जिस गांव की आबादी एक हजार की है वहां लोग एक हो कर खेती कैसे कर सकते हैं ? यह कभी सम्भव है ? हम लोग भेद के लिये और खेत के लिये जान दे देते हैं, आपस में कट मरते हैं, तो क्या कभी यह सम्भव हो सकता है । इस लिये मैं फूड मिनिस्टर साहब से कहूंगा कि वह इस की जांच पड़ताल करें कि स्माल होल्डिंग्स में कितनी पैदावार होती है और बड़ी होल्डिंग्स में कितनी पैदावार होती है । और उस के बाद उन का औसत निकाल लिया जाय । जब तक हमारे खेती के सिर पर से ३०, ४० फी सदी लोगों का बोझा नहीं हटेगा तब तक हम कुछ नहीं कर सकेंगे । इस लिये मैं कहता हूं कि आप छोटी बड़ी होल्डिंग की बात को छोड़ दें ।

आप को खाद का भी दाम घटाना चाहिये । जो फर्टिलाइजर आप देते हैं उस को भी गल्ले की कीमत के हिसाब से सस्ता कीजिये । फर्टिलाइजर तो फूड एण्ड एग्रीकल्चर मिनिस्ट्री की चीज है, उस की कीमत तो आप घटाइये । साथ ही पानी का चार्ज भी घटाइये । आप को आबपाशी का चार्ज भी घटाना चाहिये । आज आप उस को नहीं घटाते हैं ।

एक बात और है । अभी एक नया पम्प लगाया है सिंचाई के लिये, वह सन्तोषप्रद काम नहीं कर रहा है । कारण यह है कि उस का चार्ज बहुत ज्यादा है और किसान उस को ले नहीं रहे हैं । इस लिये आप के लिफ्ट सिस्टम के इरिगेशन में दिक्कतें आती हैं ।

मैं अपने फूड एण्ड एग्रीकल्चर मिनिस्टर से कहूंगा कि वह किसानों के मालिक हैं, लेकिन जरा दस पन्द्रह दिन के लिये गांवों में जा कर तो देखें कि वहां पर किसानों की क्या हालत है । उन को मैं समझता हूं कि खबर नहीं है कि उन की क्या हालत है, क्योंकि कभी देखने के लिये जाते तो हैं नहीं । पंच वर्षीय योजना में जो मजदूर लोहा पैदा करते हैं उन को प्राविडेंट फंड मिलता है, लेकिन जो गल्ला पैदा करते हैं उन को हमारी सरकार कुछ नहीं देती । उन को प्राविडेंट फण्ड भी देना चाहिये जो कि गल्ला पैदा करते हैं ।

MEMBER SWORN

1 P.M.

Shri Ram Krishna Gupta (Mohindergarh).

MOTION *RE* ECONOMIC POLICY

Shri G. H. Deshpande (Nasik Central): If one would take a cursory glance over the things that have happened in our rural areas during the last 8 years, one will find undoubtedly that a great change has